SC

[67 – A-102] No. of printed pages: 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M. A. (Hindi) (IV Semester) Examination
1st April 2016 (Friday)
2.30 pm – 5.30 pm
PA04CHIN03 – छायावादोत्तर काव्य

कुल अंक : ७०

प्र.: १ कामाध्यात्म काव्य के रूप में दिनकर कृत 'उर्वशी' की समीक्षा कीजिए । (१७)

अथवा

प्र.: १ अज्ञेय कृत 'असाध्य वीणा' के कथ्य का स्रोत बतलाते हुए इस कविता के कथ्य व शिल्प की चर्चा करें । (१७)

प्र.: २ नागार्जुन की कविताओं में व्यक्त प्रगतिवादी स्वर पर सोदाहरण प्रकाश डालिए । (१७)

अथवा

प्र.: २ 'अँधेरे में' कविता में वर्णित स्वप्न दृश्यों को व्याख्यायित कीजिए । (१७)

प्र.: ३ टिप्पणी लिखिए: **(किन्हीं दो)** (१८)

(१) 'उर्वशी' में युगबोध
(२) मुक्तिबोध का साहित्यिक परिचय
(३) 'नदी के द्वीप' में व्यक्त विचार
(४) नागार्जुन की भाषाशैली

प्र.: ४ संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: (१८

(१) शब्द नहीं है; यह गूँगे का स्वाद. अगोचर सुख है;
प्रणय-प्रज्वलित उर में जितनी झंकृतियाँ उठती है,
कहकर भी उनको कह पाते कहाँ सिद्ध प्रेमी भी?
भाषा रूपाश्रित, अरूप है यह तरंग प्रणों की ।

अथवा

अति प्राचीन कि रीटी-तरु से इसे गढ़ा था –
उसके कानों में हिम-शिखर रहस्य कहा करते थे अपने,
कन्धों पर बादल सोते थे,
उसकी करि-शुण्डों सी डालें
हिम-वर्षा से पूरे वन-यूथों का कर लेती थीं परित्राण,
कोटर में भालू बसते थे,
केहरि उसके वल्कल से कन्धे खुजलाने आते थे ।

(२) रात का पक्षी
कहता है :
'वह चला गया है,
वह नहीं आएगा, आएगा ही नहीं
अब तेरे द्वार पर ।
वह निकल गया है गाँव में शहर में !
उसको तू खोज अब
उसका तू शोध कर !
वह तेरी पूर्णतम परम अभिव्यक्ति,
उसका तू शिष्य है (यद्यपि पलातक .....)
वह तेरी गुरु है
गुरु है .....'

अथवा

ऋतु वसंत का सुप्रभात था
मंद मंद था अनिल बह रहा
बालारूण की मृदु किरणें थी
अगल-बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक दूसरे से विरहित हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती,
निशा काल से चिर अभिशापित
बेबस उस चकवा-चकई का
बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रणय कलह छिडते देखा है ।